

दुगो चालोसा

चौपाई 1

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अम्बे दुःख हरनी॥

चौपाई 2

निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी॥

चौपाई 3

शशि ललाट मुख महा विशाला।
नेत्र लाल भृकुटि विकराला॥

चौपाई 4

रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरश करत जन अति सुख पावे॥

चौपाई 5

तुम संसार शक्ति लय कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना॥

चौपाई 6

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥

चौपाई 7

प्रलयकाल सब नाशन हारी।
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी॥

चौपाई 8

शिव योगी तुम्हरे गुण गावें।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥

चौपाई 9

रूप सरस्वती को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥

चौपाई 10

धरा रूप नरसिंह को अम्बा।
परगट भई फाड़ कर खम्बा॥

चौपाई 11

रक्षा करि प्रह्लाद बचायो।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो॥

चौपाई 12

लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायण अंग समाहीं॥

चौपाई 13

क्षीरसिन्धु में करत विलासा।
दयासिन्धु दीजै मन आसा॥

चौपाई 14

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जात बखानी॥

चौपाई 15

मातंगी धूमावति माता।
भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥

चौपाई 16

श्री भैरव तारा जग तारिणी।
छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी॥

चौपाई 17

केहरि वाहन सोह भवानी।
लांगुर वीर चलत अगवानी॥

चौपाई 18

कर में खप्पर खङ्ग विराजे।
जाको देख काल डर भाजे॥

चौपाई 19

सोहै अस्त्र और त्रिशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥

चौपाई 20

नगरकोट में तुम्हीं विराजत।
तिहूँ लोक में डंका बाजत॥

चौपाई 21

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥

चौपाई 22

महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥

चौपाई 23

रूप कराल कालिका धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥

चौपाई 24

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब॥

चौपाई 25

अमरपुरी अरु बासव लोका।
तव महिमा सब रहें अशोका॥

चौपाई 26

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नर नारी॥

चौपाई 27

प्रेम भक्ति से जो यश गावै।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवें॥

चौपाई 28

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥

चौपाई 29

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥

चौपाई 30

शंकर आचारज तप कीनो।
काम अरु क्रोध जीति सब लीनो॥

चौपाई 31

निशिदिन ध्यान धरो शंकर को।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥

चौपाई 32

शक्ति रूप को मरम न पायो।
शक्ति गई तब मन पछितायो॥

चौपाई 33

शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदम्ब भवानी॥

चौपाई 34

भई प्रसन्न आदि जगदम्बा।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥

चौपाई 35

मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो॥

चौपाई 36

आशा तृष्णा निपट सतावै।
रिपु मूरख मोहि अति डरपावै॥

चौपाई 37

शत्रु नाश कीजै महारानी।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥

चौपाई 38

करो कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला॥

चौपाई 39

जब लगि जियौ दया फल पाऊं।
तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं॥

चौपाई 40

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परमपद पावै॥

समापन चौपाई

देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥